पंचम चरण: 1971 से वर्तमान (नवीन लोक

प्रशासन)

लोक प्रशासन के विकास के इस चरण में निम्नलिखित

प्रवृत्तियां उभरी हैं : 1. प्रशासन को मुख्य रूप से किसी संगठन के भीतर के लोगों और उससे बाहर के लोगों के बीच निश्चित अवधि के भीतर होने वाली अनवरत अन्तः क्रिया की प्रक्रिया के रूप में देखा जाने लगा।

2. लोक प्रशासन तथा निजी व्यवसाय प्रशासन के अलग-अलग अध्ययनों को एक ही संगठित विज्ञान में बदल देने की प्रवृत्ति उभरी जिसके सिद्धान्त और धारणाएं लोक प्रशासन और निजी प्रशासन दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं।

3. विविध सामाजिक परिवेश और पर्यावरण में प्रशासनिक व्यवस्थाओं के तुलनात्मक अध्ययन पर जोर ।

4. कम्प्यूटर युग के आरम्भ के साथ कम्प्यूटरों तथा दूसरे यन्त्रों की सहायता से मानव मस्तिष्क की निर्णय करने वाली तथा समस्याओं को सुलझाने वाली प्रक्रिया को समझने का प्रयास होने लगा।

5. अन्तःअनुशासनात्मक अध्ययन पर जोर । 6. अनेक स्तरों पर राजनीति और प्रशासन की परस्पर

एक-दूसरे में व्याप्ति। लोक प्रशासन के विकास के इस चरण में योगदान देने वाले विद्वानों में वाल्डो तथा फ्रेड डब्ल्यू रिग्स के नाम उल्लेखनीय हैं। फ्रेड रिग्स ने लोक प्रशासन के तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया है। विकासशील देशों के समाजों के अध्ययन के लिएउसने आदर्शों व नमूनों (Models) का निर्माण किया। आजकल लोक प्रशासन के अध्ययन में 'अन्तर्विषयी सहयोग तथा अध्ययन' (Inter-disciplinary Co-operation and Study) पर जोर दिया जाने लगा है। अनेक शास्त्रों के विद्वान लोक प्रशासन में आए तथा इसकी सेवा करने लगे। अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, आदि शास्त्रों के विद्वान इस विषय में रुचि लेने लगे। इन सबके फलस्वरूप लोक प्रशासन 'अन्तर्विषयी' बन गया।

लोक प्रशासन के विकास के वर्तमान दौर में विभिन्न समाज विज्ञान लोक नीति के विश्लेषण की चिन्ता से ग्रस्त हैं। अब लोक प्रशासन के अध्ययन में राजनीतिक अथवा नीति निर्धारक प्रक्रियाओं तथा विशेष लोक कार्यक्रमों के अध्ययन पर ध्यान दिया जाने लगा है। 1968 के बाद लोक प्रशासन के अध्ययन को 'नवीन लोक प्रशासन के अभ्युदय ने समृद्ध किया है। 'नवीन लोक प्रशासन की दृष्टि से निम्नलिखित घटनाएं उल्लेखनीय हैं (i) संयुक्त राज्य अमरीका में लोक सेवा के लिए उच्चतर शिक्षा पर हनी प्रतिवेदन (1967); (ii) अमरीका में आयोजित लोक प्रशासन के सिद्धान्त और व्यवहार पर फिलाडेल्फिया सम्मेलन (1967); (iii) फ्रेन्क मेरीनी द्वारा सम्पादित ग्रन्थ 'टूवार्ड ए न्यू पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन द मिनाउ परस्पेक्टिव' (1971); (iv) वाल्डो द्वारा सम्पादित ग्रन्थ "पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन इन ए टाइम ऑफ टरबुलेन्स" (1971) | L

'नवीन लोक प्रशासन' लोक प्रशासन की मूल्य मुक्त व्याख्या को अस्वीकृत करता है। यह राजनीति प्रशासन के द्विविभाजन को भी अस्वीकार करता है, यह संगठन के बारे में यान्त्रिकता का विरोधी है, यह मानवीय सम्बन्धों तथा प्रशासन एवं सामाजिक परिवर्तनों के बारे में नए रचनात्मक दृष्टिकोण पर विशेष बल देता है।